आपकी टिप्पणियाँ

315hi27

27

20वीं शताब्दी में सामाजिक रूपांतरण

अध्याय 26 में आपने 19वीं शताब्दी में औपनिवेशिक विस्तार तथा पूँजीवादी औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप हुए परिवर्तनों का अध्ययन किया। इस अध्याय में हम 20वीं शताब्दी की उस सामाजिक प्रक्रिया की तीव्रता और गहराई का अध्ययन करेंगे जिसने 19वीं शताब्दी को पहचान दी थी। इनमें से कुछ तो मानव जीवन पर अमिट प्रभाव डालने वाली थीं।

20वीं शताब्दी के अंतिम दशक ने यूरोप में समाजवादी समूहों का पतन तथा पूँजीवादी कल्याणकारी राज्यों का विनाश भी देखा। इसने पूँजीवादी देशों के बीच तथा पूँजीवादी देशों के भीतर असमानता में वृद्धि भी देखी। हम इनमें से कुछ तथा पूँजीवाद तथा समाजवादी विचारधाराओं के सामाजिक रूपान्तर में भिन्नताओं का भी अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- औद्योगिकीकरण के विकास ने किस प्रकार विश्व के कई भागों में समाज के आधारभूत परिवतनों में सहयोग दिया, इस पर चर्चा कर सकेंगे;
- यह पहचान कर सकेंगे कि पहले से ही विकसित देशों तथा 20वीं शताब्दी में अंग्रेजी राज से आजाद होने वाले देशों के बीच अंतर था;
- विकसित देशों में समय के साथ हुए परिवर्तन का अध्ययन कर पाएँगे;
- पूँजीवादी तथा समाजवादी देशों के बीच अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे।

27.1 जनसांख्यिकी परिवर्तन

19वीं शताब्दी में विद्यमान जनसांख्यिकी परिवर्तन अगली सदी में भी जारी रहा। नब्बे के दशक में विश्व में 5 या 6 खरब लोग थे, शायद उस संख्या से तीन गुना जो प्रथम विश्व युद्ध के लड़े जाने के बाद थी। यह संख्या उन 18.70 करोड़ लोगों की मृत्यु के बावजूद थी जिनकी इस शताब्दी के दौरान विविध कारणों से स्वाभाविक मृत्यु हुई।

पूरे देश में सशक्त केन्द्रीय (आर्थिक) आयोजना और संसाधनों (उत्पादन के साधनों) पर राष्ट्र के स्वामित्व के बजाय, जैसा कि 1980 से पहले था, विदेशी भागीदारों सहित पूँजीपतियों को अपनी निवेशकों के लिए लाभ कमाने की अनुमति होती है। विशेष 'मुक्त उद्यम क्षेत्रों' को मान्यता देकर चीनी राज्य उनमें पूँजीवाद को कार्य करने की अनुमति देते है।

संपूर्ण 20वीं शताब्दी में विश्व जनसंख्या में वृद्धि दिखाई देती है। पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में यह मुख्यतः विकसित स्वास्थ्य सुविधाएं तथा कम शिशु मृत्यु दर की वजह से हुआ तथा सामाजिक सुरक्षा प्रणाली ने जीवन आयु वृद्धि में मुख्य भूमिका निभाई। यूरोप तथा अन्य प्रायद्वीपों में यह वृद्धि इसलिए थी क्योंकि जन्म दर बहुत ऊंची थी।

किंतु 1930 के पश्चात हम पूर्वी यूरोप में भी कमी का रुख देखते हैं तथा 1960 तक तो लगभग पूरे यूरोप में कम प्रजनन था, हालांकि न्यून मृत्यु दर के प्रति संतुलन था। अतः कुल मिलाकर पूरे विकसित संसार में जनसंख्या में वृद्धि हुई।

किंतु 20वी शताब्दी में हुए दो विश्व युद्धों का यूरोप की जनसंख्या वृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। क्योंकि काफी संख्या में लोग मारे गए तथा देर से विवाह तथा परिवारिक जीवन में अवरोध भी कारण बने।

1945 के पश्चात विकासशील देशों में पश्चिम की तुलना में कहीं अधिक जनसंख्या वृद्धि देखी गई। 20वी शताब्दी में जहाँ एक ओर विकसित स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होने लगीं वहीं कृषि प्रधान पुरानी अवधारणा (जितने हाथ उतने काम) भी प्रचलन में रही, जिसकी परिणति अधिक गति से जनसंख्या वृद्धि में हुई।

एक तुलनात्मक तथ्य प्रदर्शित करता है कि सदी के अंत में पश्चिमी जगत में विश्व की जनसंख्या का 1/6 हिस्सा ही होगा।

जनसांख्यिकी परिवर्तनों ने मानवीय रहन–सहन तथा जनसंख्या वितरण के ढंग को भी बदल दिया। उदाहरण के लिए, 20वीं शताब्दी में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने में लगातार प्रवास एक महत्त्वपूर्ण घटक रहा। 1901 से 1915 तक यूरोप में अत्यधिक मात्रा में प्रवास हुआ। दक्षिण तथा पूर्वी यूरोप से जहाँ एक ओर लोग बाहर जा रहे थे वहीं उत्तरी यूरोप में प्रवासी वापस आ रहे थे और जा भी रहे थे। पश्चिमी यूरोप में प्रवासी आ अधिक रहे थे और जा कम रहे थे। प्रवास का यह विशिष्ट ढाँचा राजनीतिक प्रभाव के चलते श्रमिकों की बढ़ती तथा घटती मांग के कारण था। उदाहरणार्थ, नाजी नीतियों की वजह से जर्मनी से यहूदियों, अल्पसंख्यकों तथा राजनीतिक कैदियों का पलायन हुआ। जबकि युद्ध के पश्चात पुनर्वास की वजह से जर्मनी में तुर्क श्रमिकों का प्रवास हुआ। रूस तथा स्पेन में नागरिक युद्ध के चलते भी बाहरी प्रवास हुआ।

इस प्रकार हम देख सकते है कि जनसंख्या वृद्धि तथा स्थानांतरण कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं के परिणाम थे। आज हम गरीब देशों से अमीर देशों में पलायन देखते हैं किन्तु अधिकतर प्रशिक्षित तथा कुशल मध्य वर्ग को, जबकि गरीब व्यक्ति के पास कड़े नियम के चलते प्रवास का कोई अवसर ही नहीं होता। हालांकि मध्य–एशिया में गरीब तबकों का प्रवास कोई बड़ी बात नहीं है।

पुत्र की अभिलाषा ने भारत तथा चीन जैसे देशों में लिंग संतुलन को नष्ट कर दिया तथा अब यह चिंता का विषय बन गया है।

27.2 शहरीकरण

आधुनिक शहरी जीवन पूँजीवादी औद्योगीकरण से संबंधित है। शहरीकरण का क्या अर्थ है? शहरों की सख्या में वृद्धि तथा ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में शहरी जनसंख्या में

आपकी टिप्पणियाँ

तेजी से वृद्धि। इस प्रकार शहरीकरण एक स्वाभाविक प्रक्रिया न होकर औद्योगीकरण तथा शहरों में बेहतर आर्थिक अवसरों की वजह से ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन है। आप पाठ 22 में इस प्रक्रिया के विषय में पढ़ चुके हैं। यह आपको पूरे विश्व में, यहाँ तक कि पूरे यूरोप में भी एक सा नहीं मिलेगा, एक देश में भी यह नहीं है और यह प्रक्रिया अचानक नहीं आई है।

हमें औद्योगीकरण तथा अनौद्योगीकरण वाले क्षेत्रों में भारी असमानता देखने को मिलती है। कई क्षेत्रों में कृषि–का मशीनीकरण हो गया तो कहीं नहीं हुआ। औद्योगीकरण के साथ ही अधिकतर व्यक्ति निर्मित सामान के उत्पादन तथा सेवाओं के क्षेत्र में आए, किंतु ये दोनों ही क्षेत्र शहरों तथा कस्बों में ही केन्द्रित रहे।

सन 1900 में ब्रिटेन जहाँ औद्योगीकरण हुआ, प्रथम देश था, सर्वाधिक 77% तक शहरी जनसंख्या वाला देश था, जबकि जर्मनी जिसमें तब तक काफी गति से औद्योगीकरण हो रहा था, 56% शहरी जनसंख्या वाला देश हो चुका था। अन्य देशों में 50 प्रतिशत से कम ही शहरी जनसंख्या थी। और यदि इस शताब्दी के प्रारंभ में पूरे विश्व को आँके तो हम पाएँगे कि करीब 70 प्रतिशत जनसंख्या अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती थी।

20वीं शताब्दी के परिप्रेक्ष्य में यदि हम देखें तो पाएँगे कि विज्ञान तथा तकनीक में परिवर्तन के चलते उत्पादन वृद्धि ने शहरीकरण को और अधिक विस्तृत कर दिया। अमेरिका तथा इंग्लैंड में 1970 के मध्य तक 95 प्रतिशत से अधिक कार्यरत जनसंख्या निर्माण तथा सेवा क्षेत्र में कार्यरत थी, जबकि कृषि क्षेत्र में मात्र 5 प्रतिशत जनसंख्या ही रोजगार पा रही थी। यूरोप में (रूस के अतिरिक्त) 1980 के मध्य तक 70 प्रतिशत, जापान में 80 प्रतिशत तक जनसंख्या शहरी क्षेत्र में निवास कर रही थी, जबकि 20 प्रतिशत से कम कृषि क्षेत्र में।

रूस जैसे देशों में 1917 तक अधिकतर जनसंख्या गांवों से जुड़ी थी। हालांकि 1930 तथा शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रूस में तेजी से शहरीकरण हुआ। एशिया तथा अफ्रीका के कई देशों में (भारत–सहित) कृषि अभी भी ऐसा क्षेत्र था, जहाँ लोग अधिक संख्या में रोजगार पा रहे थे। शहरीकरण का अर्थ बड़े शहरों में प्रगति ही नहीं बल्कि हमारे जैसे विकासशील देशों में छोटे कस्बों का विस्तार भी था। सन 1900 में करीब 16 शहर ही एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले थे, 1950 में ये 67 तथा 1985 में ये 250 से अधिक हो गए। कुल मिलाकर पूरे विश्व में करीब 40 प्रतिशत से अधिक व्यक्ति शहरों में निवास कर रहे थे। और आज यह संख्या पचास प्रतिशत तक हो सकती है। आप यह प्रवृत्ति हमारे देश में भी देख सकते है। हजारों की संख्या में लोग नौकरी की तलाश में बाहर आ रहे हैं। वास्तव में विकासशील देशों में कई शहर तो विश्व के सबसे बड़े शहर हैं – कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, फैरो, शंघाई, नैरोबी, सियोल, बैंकाक, इत्यादि।

पाठगत प्रश्न 27.1

1. जनसंख्या वृद्धि किस प्रकार दो विश्व युद्धों से प्रभावित हुई?

2. किस प्रकार राजनीतिक पहलुओं ने जर्मनी में जनसंख्या पलायन को प्रभावित किया?

3. शहरीकरण से आप क्या समझते हैं?

4. विकासशील देशों के कुछ बड़े शहरों के नाम बताएं?

27.3 आधुनिक सामाजिक वर्ग

पूँजीवादी औद्योगीकरण का परिणाम आधुनिक सामाजिक वर्ग के रूप में सामने आया जिससे हमारा तात्पर्य उस सामाजिक वर्ग से है जो रूपांतरित होने से पहले हुआ करता था तथा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था तथा समाज का अभिन्न अंग था। दो नए वर्गों का उदय हुआ–मध्य वर्ग तथा श्रमिक वर्ग। पूर्व–पूँजीवाद व्यवस्थाएं भूमि की संपत्ति तथा भूमि के स्वामित्व के द्वारा संचालित होती थीं। जैसे ही यह संसार के हर क्षेत्र में फैला, दोनो पूँजीवादी उद्योगीकरण से बहुत बुरी तरह प्रभावित हुए। जनसंख्या तथा शहरीकरण में परिवर्तन के फलस्वरूप पूरे विश्व में सामाजिक ढांचे में बदलाव एक समान नहीं थे तथा न ही अचानक आए थे।

अधिकांश यूरोप के लिए 19वीं शताब्दी एक महत्त्वपूर्ण युग था, जब अचानक आई कुलीनता ने उनकी जिंदगी को बदल कर रख दिया। इंग्लैंड में वे आधुनिक जमींदार बन गए जो भूमि के किराए तथा अन्य पूँजीवादी कामों, जैसे – वाणिज्य, खनन, रेलवे इत्यादि से पैसा कमाते थे। इन जमींदारों का वर्चस्व 20वीं शताब्दी में भी कायम रहा।

किसान हालाँकि पूँजीवादी औद्योगीकरण तथा कृषि में पूँजी की अधिकता के बावजूद समाज का महत्त्वपूर्ण घटक बने रहे, लेकिन पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने उनकी जिंदगी को बदल कर रख दिया कृषक वर्ग स्वयं वर्गों में विभाजित हो गया – अमीर, गरीब तथा मध्य किसान तथा सम्पत्ति आपराधिक तथा राज्य प्राधिकरणों की संचालन अलग–अलग करने लगे। इसी दौरान भूमिहीन खेती श्रमिकों का वर्ग भी हमें दीखता है। हालांकि कृषि में संलग्न व्यक्तियों की संख्या यूरोप में तब तक कम नहीं हुई, जब तक कि 1940 में कृषि का मशीनीकरण हो गया था। जमींदार के साथ रिश्ते सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण पहलू बने रहे।

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लगभग पूरे पश्चिमी जगत से किसान हमें गायब मिलते हैं तथा सामान्यतया जापान तथा पूर्वी एशिया में भी किसानों की संख्या में ह्रास दिखाई पड़ता है, मात्र सहारा – अफ्रीका, भारत तथा चीन में किसान भारी तादाद में बने रहे।

तीसरी दुनिया के देश विशेषकर एशिया तथा अफ्रीका की सरकारों द्वारा आत्मसमर्पण ने कृषि संबंधी विपदाओं को बढ़ाया तथा किसानों के लिए परेशानी वाली स्थिति उत्पन्न कर दी थी। भूमिहीनता बढ़ रही थी तथा व्यावसायिक कृषि के बढ़ने का अर्थ था फसलों का स्थानातंरण होना। निर्यात करने वाली फसलों के प्रति यूरोप के पूँजीवादी देशों की मांग ने खाद्यान्न फसलों के उत्पादन को कम कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप किसान वर्ग

आपकी टिप्पणियाँ

ने खाद्य पदार्थों के उपयोग को भी कम कर दिया जो कि यह हजारों किसान वर्गों की आत्महत्या की वजह बनी और समर्थन मूल्य, लागत का कम मूल्य तथा सिंचाई के लिए पानी और बिजली के लिए आंदोलन में सहायक रही। चीन अपनी कृषि व्यवस्था को राजनीतिक प्रणाली के साथ जोड़ने में सक्षम रहा। किंतु दो दशकों के भूमि सुधार असंतोष को बढ़ावा दे रहे थे क्योंकि औद्योगिक उद्देश्यों के लिए कृषि भूमि की माँग थी।

मध्यवर्ग प्रगतिशील तथा अंततः अधिकार स्थापित करने वाला वर्ग बनकर 20वीं शताब्दी में उभरा। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से पूरे पश्चिमी यूरोप में सबसे समृद्ध तथा प्रभावशाली मध्यवर्ग रहा था – उद्योगपति, फैक्ट्री मालिक, बैंकर तथा खान मालिक।

मध्यवर्ग में दुकानदार, प्रबंधन, डॉक्टर, इंजीनियर तथा सेवारत लोग भी शामिल थे। शिक्षा के विस्तार के साथ ही इस वर्ग का भी विस्तार हुआ। 20वीं शताब्दी के दौरान इसमें निम्न मध्यवर्ग की संख्या भी देखी जाने लगी जिन्हें कम वेतन प्राप्त हुआ करता था। यह वर्ग सर्वाधिक असुरक्षित वर्ग तथा अर्थव्यवस्था के उतार–चढ़ाव में सबसे ज्यादा प्रभावित वर्ग हुआ करता था ।

श्रमिक वर्ग का निर्माण जो श्रम के मूल्य पर आधारित था, का संबंध पूँजीवादी उद्योग की प्राप्ति से है। पूरे यूरोप में श्रमिक वर्ग संतुष्ट तथा 20वीं शताब्दी में भिन्न बना रहा क्योंकि मशीनीकरण अचानक नहीं आया था तथा सभी उद्योग एक साथ मशीनीकृत नहीं हुए थे। कुछ बड़ी फैक्ट्रियों के उदय से कुछ हस्तशिल्प तो मर चुके थे, किंतु नई योग्यताओं की आवश्यकता थी तथा नए दक्ष श्रमिक, धातु से संबंधित तथा इलैक्ट्रिक तथा बाद में इलैक्ट्रांनिक व्यक्तियों की माँग दिन – ब – दिन बढ़ रही थी। किंतु लगभग हर समय में कुशल कारीगर, घरेलू नौकर, दर्जी, धोबी, छपाई कर्मचारी, मजदूर, डाक अधिकारी, कई पदों पर तैनात थे। भारतीय रेलवे के कर्मचारी सभी शहरों में साथ–साथ निवास किया करते थे। इन श्रमिकों का एक महत्त्वपूर्ण घटक महिलाएं थी, हालांकि इस क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश निषिद्ध था। यह सब औपनिवेशिक संसार में श्रमिक वर्ग के लिए एकदम सटीक था। जैसे कि एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका में – और बाद में भी जब वे स्वतंत्र हो गए।

नगर तथा सामाजिक जीवन

शहर तथा सामाजिक जीवन गरीब तथा अमीर के भेदों को प्रत्यक्ष दर्शाता है। उनके शहर में रहने के ठिकाने एकदम अलग थे, तथा मिलने वाली सुविधाएं भी अलग थीं। बहुमंजिला इमारतों, मॉल, बड़े स्टोर, पार्कों, मुख्य मार्ग ने आधुनिक शहरों के जमीनी संसार को बदलकर रख दिया था। लेकिन इनके कारण प्रदूषण, गंदे सीवेज, झुग्गी–झोपड़ी, एक दो या तीन परिवार एक कमरे में ही रहते थे। यह आज भी संसार के किसी भी शहर का हिस्सा बन हुआ है। बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बनी हुई थी।

27.5 परिवार

पूँजीवादी उद्योगीकरण के परिणामस्वरूप एकल तथा संयुक्त दोनों परिवारों में परिवर्तन आए। आर्थिक क्रांति से पूर्व गृहस्थी का अर्थ पारिवारिक कार्यों तथा श्रम में कोई अंतर न समझना था जबकि कई महत्त्वपूर्ण काम महिला तथा पुरुष द्वारा अलग–अलग किए करते रहे।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के साथ ही परिवार उत्पादन की एक इकाई न रहा, हालांकि उपयोग के मामले में यह एक ही इकाई बना रहा। उत्पादकों तथा कारखानों की वृद्धि ने श्रम मूल्य को जन्म दिया, हर व्यक्ति परिवार में पृथक् रूप से कमाता था। मध्यवर्ग के मूल्य थे – एक व्यक्ति का वेतन पूरे परिवार का वेतन समझा जाता था अर्थात एक व्यक्ति के वेतन पर ही पूरा परिवार जीवन–यापन करता था तथा महिलाओं के काम थे मुख्यतः घर को संभालना तथा बच्चों की देखभाल करना। ये हालांकि मध्य वर्ग के मूल्य थे, जिन्हें थोड़ा सा बेहतर कामकाजी वर्ग पाना चाहता था, किंतु ये श्रमिक वर्ग के लिए बाध्यकारी नही थे।

श्रमिक वर्ग की महिलाएं भी पुरुषों की भांति मजदूर थीं। जबकि वास्तव में कुछ उद्योग तो महिलाओं और बच्चों को ही श्रमिक के रूप में रखते थे क्योंकि उन्हें कम वेतन देना होता था। व्यवहार में समान काम समान दाम का सिद्धांत महिलाओं पर लागू नहीं होता था।

आधुनिक संसार में महिलाएँ घर और परिवार दोनों की ही जिम्मेदारी सँभाल रही हैं। इस स्थिति से तो आज सभी भली – भांति परिचित ही होंगे।

पाठगत प्रश्न 27.2

1. पूँजीवादी औद्योगीकरण के फलस्वरूप कौन से दो वर्गों का उदय हुआ?

2. मध्य वर्ग में कौन–से व्यक्ति सम्मिलित थे?

3. बड़े कारखानों के उदय ने श्रमिकों को किस प्रकार प्रभावित किया?

4. पूँजीवादी औद्योगीकरण ने महिलाओं के रोजगार के क्षेत्र में क्या प्रभाव डाले?

27.6 महिला की समानता तथा नारीवाद

20वीं शताब्दी में अर्थव्यवस्था के विस्तार ने साक्षरता के संग महिलाओं के लिए नई राहें खोलीं, मध्यवर्ग तथा श्रमिक वर्ग दोनों ही महिलाओं के लिए। घरेलू सेवाओं के अतिरिक्त महिलाएं अब दुकानों तथा कार्यालयों में भी कार्यरत थीं। नर्स तथा स्कूल अध्यापिका इत्यादि को प्रथम महिला अनुकूल नौकरियाँ माना गया। दोनों विश्वयुद्धों में महिलाओं को नए अवसर प्रदान किए गए, क्योंकि पुरुषों के युद्ध में चले जाने की वजह से उनके काम महिलाओं को करने पड़े। इन सबसे महिलाओं की सामाजिक स्थिति तथा अपेक्षाओं में बदलाव आया।

मध्यवर्गीय महिलाओं ने मतदान का अधिकार मांगा तथा समानता की मांग में मताधिकार आंदोलन एक महत्त्वपूर्ण घटक बन गया। पश्चिमी जगत में महिलाओं की स्थिति में वास्तविक बदलाव श्रम तथा सामाजिक आंदोलनों के फलस्वरूप आया, जिसने सभी दबे–कुचलों के मुद्दे उठाए तथा समाज में ऐसे परिवर्तन की मांग की जो समानता लाए। महिलाओं ने इसे यथार्थ माना। महिलाओं ने बड़ी संख्या में संघ के सदस्य तथा सामाजिक संगठन बनाए तथा आंदोलनों के भी हालांकि नेतृत्व के मुद्दे पर वे उठ नहीं पाई। महिलाओं के लिए इन संस्थानों में समानता पाना संभव न था और महिलाओं को समान अधिकार की मांग कई आंदोलनों के दबाव के फलस्वरूप पूरी की गई।

रोजा लक्समबर्ग तथा बेट्रिक वेब प्रख्यात समाजवादी नेता थीं, कॉलेट तथा सेलमा लेजरलोफ महत्त्वपूर्ण लेखिकाएँ थीं। तथा आरंभिक 20वीं शताब्दी से ही महिलाएं महत्त्वपूर्ण टेनिस प्रतियोगिताओं, जैसे विम्बलडन, अमेरिकी ओपन में भाग लेने लगी थीं। महिलाओं ने पत्रकारिता तथा फोटोग्राफी को भी पेशे के रूप में अपनाना प्रारंभ कर दिया था तथा वे डॉक्टर तथा इंजीनियर भी बनने लगी थीं। सोवियत संघ में उसके बड़े संस्थानों, संसद आदि में काफी संख्या में महिलाएं थीं तथा वैज्ञानिक संस्थानों में भी।

रूस में श्रमिक आंदोलन में महिलाओं की भूमिका अहम रही। तथा कृषक महिलाएँ हरित आंदोलन का हिस्सा थीं। रूस में तथा उपनिवेश विरोधी आंदोलन में उन्होंने जन प्रतियोगिता के लिए उपयुक्त माहौल पाया। भारत और चीन जैसे देशों में महिलाओं को शिक्षा के प्रश्न तथा सामाजिक पिछड़ापन, स्वतंत्रता आंदोलन का ही अंग थे तथा महिला–पुरुष दोनों ने ही इसके प्रति सहास दिखया जिसके परिणामस्वरूप स्वतंत्रता के पश्चात महिलाओं को भी पुरुषों के समान मत डालने का अधिकार मिला। रूस की क्रांति 1917 के बाद रूस में यह काफी पहले मिल गया था।

सन 1990 तक महिलाएं 16 देशों में शासनाध्यक्ष हो चुकी थी। कार्यस्थल पर उनकी संख्या नाटकीय रूप से एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका में बढ़ी। मॉरीशस इसका सटीक उदाहरण है। चीन तथा पूर्वी यूरोप में सौ प्रतिशत महिला रोजगार हासिल हो चुका है।

और यह कहने की बात नहीं कि समानता के लिए महिलाओं का संघर्ष समाप्त हुआ; यह संसार में प्रत्येक स्थान पर लागू नहीं होता। 1990 की नव–उदार नीतियों ने बेरोजगारी को बढ़ावा दिया। महिलाएं भी इसकी चपेट में आईं जिनमें पूर्व समाजवादी देश भी थे। तीसरी दुनिया के देशों में महिलाओं को गैर–संगठित क्षेत्र में काम करने को बाध्य होना पड़ा जिसमें न तो श्रमिक अधिकार थे, न ही न्यूनतम भत्ते की गारंटी। घरेलू सेवा अभी भी महिलाओं के रोजगार का साधन थी।

भारत में कन्या शिशु हत्या तथा भ्रूण हत्या 20वीं शताब्दी के आखिरी दशक में काफी बढ़ गइ थी। भारत में दहेज हत्या तथा संसार में घरेलू हिंसा में भी बढ़ोतरी पाई गई।

27.7 काम के तरीकों में परिवर्तन

जैसे–जैसे कारखाना प्रणाली विकसित होती गई, काम करने के तरीके बदलते गए। यूरोप में यह 19वीं शताब्दी में हुआ, किंतु बाकी संसार में यह 20वीं शताब्दी में हुआ। श्रमिकों का कार्यस्थल कारखाना हो गया। उसे समय काम के निर्धारित समय का

अनुसरण करता होता था। महिलाएं तथा बच्चे भी काम पर लग गए तथा उन्हें भी कारखाने के नियमानुसार ही चलना पड़ता था। कारखाना पद्धति का अपने अनुसार नियम तथा शर्तें थीं और श्रमिक नहीं, बल्कि मशीन काम का स्वरूप निर्धारित करती थी। नई तकनीक का आविष्कार बहुधा छंटनी का कारण बनता था। अतः श्रमिकों के बीच तनाव तथा बेरोजगारी बढ़ाता था, किंतु कई बार यह नई मशीनरी के अनुसार अपनी दक्षता को ढालने का अवसर देता था।

शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, एक अन्य प्रकार का परिवर्तन कार्य स्थल पर देखने को मिला। पश्चिमी देशों की कुछ बड़ी फर्मों ने पाया कि कम्प्यूटर के साथ घर से ही काम करना संभव है तथा यह सस्ता है क्योंकि उन्हे ऑफिस मशीनरी पर कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। ये परिवर्तन कर्मियों के फायदे दर्शाते थे, किंतु हकीकत में ये कर्मी कभी काम से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाते थे। वे छुट्टी तथा अन्य सुविधाएं नहीं मांग सकते थे, क्योंकि वे नौकरी नहीं करते थे तथा ट्रेड यूनियन (श्रमिक संघों) की स्थापना तथा अन्य सहयोगियों के साथ दुख बांटने का कोई अवसर भी नहीं मांग सकते थे।

नए प्रकार के सॉफ्टवेयर ने मालिकों को काम पर नजदीक से नजर रखने के अवसर दिए तथा कम्यूटर नेटवर्क के जरिए अपने कर्मियों को काम के समय पर भी आप समाचार पत्रों में पढ़ सकते हैं कि बी पी ओ तथा कॉलसेंटर में काम करने वाले लोगों की परिस्थितियों के विषय में जो हमारे देश में कुकुरमुत्तों की तरह खुल रहे हैं।

एक अन्य बड़े परिवर्तन को हम आउट–सोर्सिंग कह सकते हैं। बड़ी राष्ट्रीय कंपनियों के लिए यह बड़े फायदे का सौदा होता है कि वे अपने कुछ काम तीसरी दुनिया के देशों में स्थानांतरित कर दें, जहां वेतन भत्ते कम हैं तथा जहाँ वे सरकार करों में छूट के लिए दबाव बना सकें। इसका अर्थ हुआ, पश्चिमी देशों में बेरोजगारी में वृद्धि तथा तीसरी दुनिया के देशों के लिए नौकरी किंतु खराब दशाओं में।

बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने छोटी दुकानों का दौर भी वापस बुलाया है। जहाँ वे अपना कार्य ठेके पर दे पाएं। जिसका अर्थ हुआ कि उत्पादन घर में ही होता था। यहाँ वेतन बहुत कम था तथा श्रमिक अत्यधिक शोषित थे। क्योंकि इस प्रकार का काम तीसरी दुनिया के देशों में तेजी से बढ़ा, क्योंकि अधिकतर महिलाएं यह कार्य करना चाहती हैं।

पाठगत प्रश्न 27.3

1. 20वीं शताब्दी में महिलाओं द्वारा अपनाई गई नई नौकरियां क्या थी?

2. 1990 की नव उदार नीतियों ने महिलाओं को किस प्रकार प्रभावित किया?

3. कारखाना व्यवस्था ने काम के ढंग को किस प्रकार बदला?

आपकी टिप्पणियाँ

4. 'आउट–सोर्सिंग' के द्वारा आए बदलावों की व्याख्या कीजिए।

27.8 सामाजिक और राजनीतिक संगठन

20वीं शताब्दी में सामाजिक तथा राजनीतिक संगठन की संख्या चामत्कारिक रूप से बढ़ी। राजनीतिक दलों तथा श्रम संघों के अतिरिक्त कर्मचारियों के विभिन्न वर्गों के बीच, महिलाओं तथा क्षेत्रों और लेखकों के संगठन के अतिरिक्त संगठनात्मक रूप को हर प्रकार के विचार तथा संभावनाएँ प्राप्त हो जाएँगी – शिक्षा पर, जन स्वास्थ्य पर, अल्पसंख्यकों के अधिकार, मानवाधिकार, शक्ति आंदोलन, सभ्यता, समलैंगिक अधिकार, पर्यावरण, तथा संरक्षण, कर्ज तथा स्व–मदद समूह इत्यादि। जिंदगी का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। इनमें से कई संस्थान मांग उठा चुके हैं जो यह बताने के लिए पर्याप्त है कि हमारे समाज में क्या होता है किंतु कई संगठन समाज के पक्ष में भी हैं।

27.9 पूँजीवाद, समाजवाद और असमानता

20वीं शताब्दी के तकनीकी तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों ने महान प्रगति तथा मानव जाति को लाभ पहुंचाए। सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध सभावनाएँ पूरे विश्व की जनसंख्या की बेहतरी के लिए उपलब्ध कराई गई तथा सभी व्यक्तियों के जीवन स्तर में बेहतरी भी उपलब्ध कराई गई। किंतु वैश्वीकरण तथा आर्थिक स्तर ने अमीर और गरीब की खाई को चौड़ा ही किया है।

समाजवादी विचारधारा अपने कई दोषों के बावजूद अधिक समान समाज की रचना करने में सक्षम रही, उस बड़े अंतर के बिना जो पूँजीवादी देशों में अमीरों तथा गरीबों के बीच दीखता है।

समाजवाद के पतन के पश्चात (सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोप में) पूँजीवादी सरकारों ने कल्याणकारी कार्यों में काफी विराम लगाए हैं। जिसका परिणाम संसार के अधिकतर व्यक्तियों के खिलाफ रहा।

आपने क्या सीखा

इस अध्याय में आपने पढ़ा कि किस प्रकार 19वीं शताब्दी में प्रारंभ हुई सामाजिक प्रक्रिया 20वीं शताब्दी में फली फूली। जनसंख्या परिवर्तन के अतिरिक्त शहरीकरण की प्रगति तथा शहरी जीवन में परिवर्तन भी देखे जा सकते हैं। पूँजीवादी औद्योगीकरण के विस्तार ने आधुनिक कुलीन वर्ग को जन्म दिया तथा परिवार तथा काम के ढंग में बदलाव प्रस्तुत किए। इसने लोकप्रिय आंदोलनों तथा सामाजिक और राजनीतिक संगठनों को भी बढ़ावा दिया, जो विभिन्न वर्गों के विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पूँजीवादी औद्योगीकरण ने 20वीं शताब्दी में विस्तार किया जिसने प्रगति तो की, किंतु समाज में असमानता को भी बढ़ावा दिया।

पाठांत प्रश्न

1. पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में जनसंख्या वृद्धि के मुख्य कारणें पर प्रकाश डालिए।
2. आधुनिक कुलीन वर्ग से क्या तात्पर्य है?
3. तीसरी दुनिया के देशों में कृषि संबंधी आपदा के प्रभावों का वर्णन करें।
4. अमीरों और गरीबों की जिंदगी का चित्रण शहर किस प्रकार करते हैं?
5. श्रमिक तथा सामाजिक आंदोलनों ने महिलाओं को किस प्रकार प्रभावित किया?
6. कम्प्यूटर द्वारा कार्य की पद्धति पर पड़ने वाले प्रभावों की समीक्षा कीजिए।
7. कुछ उदहारण देकर स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार विज्ञान तथा तकनीक ने मानव जीवन को बेहतर बनाया है।
8. क्या अमीरों और गरीबों का अंतर आज बढ़ रहा है या कम हो रहा है विस्तार से चर्चा करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1

1. बड़ी संख्या में लोग मारे गए, विवाह टले तथा पारिवारिक जीवन का विध्वंस।
2. नाजी नीतियों ने यहूदियों, अल्पसंख्यकों तथा जर्मनी के राजनीतिक कैदियों के पलायन को जन्म दिया, वहीं युद्ध उपरांत पुनर्वास ने तुर्की के मजदूरों का जर्मनी में प्रवास कराया।
3. औद्योगीकरण तथा शहरों में बेहतर आर्थिक सुविधाओं के चलते ग्रामीण जनसंख्या का शहर में पलायन
4. कलकत्ता, दिल्ली, मुम्बई, शंघई, कैरो इत्यादि।

27.2

1. मध्यवर्ग, श्रमिक वर्ग
2. उद्योगपति, बैंकर, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक तथा अन्य कामकाजी वर्ग।
3. कुछ रोजगार बढ़े, कुछ ने बेरोजगारी का सामना किया, कारखाने में श्रम मूल्य कामगारों के भत्ते में परिवर्तन।
4. घर के बाहर रोजगार, असमान वेतन, कारखाना अनुशासन

27.3

1. कारखाने का काम, शिक्षक, कार्यालय, तथा दुकानें

आपकी टिप्पणियाँ

2. बेरोजगारी में वृद्धि, गैरसंगठित क्षेत्रों में तथा घरेलू काम के लिए धकेल दिया जाना
3. जगह, ढंग, काम के घंटे, अनुशासन
4. बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने काम का कुछ हिस्सा तीसरी दुनिया के देशों में स्थानांतरित कर देती हैं जहां वेतन कम है तथा जहाँ वे सरकार के ऊपर करों में छूट का दबाव बना पाए।

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. देखें 27.1 अनुच्छेद 2
2. देखें 27.3 अनुच्छेद 1
3. देखें 27.3 अनुच्छेद 5
4. देखें 27.4
5. देखे 27.6 अनुच्छेद 2
6. देखें 27.7 अनुच्छेद 2 तथा 3
7. खुद खोजें और उत्तर दें।
8. लिखें जो आप सोचते हैं।